Chapter-5

पंचम् अध्याय

शैलेश मटियानी

की

ईसाई-संदर्भ

से

युक्त

कहानियाँ

प्रास्ताविक :

यह अनेक बार कहा गया है कि मटियानीजी एक अनुभवसंपन्न लेखक है। जीवन का जितना और जैसा अनुभव उनके पास है, हिन्दी में बहुत कम ऐसे लेखक मिल सकते हैं। निम्न-वर्ग से भी निकृष्ट कहा जाए ऐसे लोगों का उन्हें न केवल अनुभव है, बल्कि ऐसे लोगों के बीच में वे काफी समय तक रहे भी हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि कोई लेखक किसी परिवेश-विशेष के गहरे अध्ययन के लिए उस परिवेश के लोगों के बीच जाकर कुछ दिन या कुछ महीने रह लेता है। ऐसा कहा जाता है कि ''सागर, लहरें और मनुष्य'' (उदयशंकर भट्ट) लिखने से पूर्व उसका लेखक मुंबई के मछुआरों की बरसोवा बस्ती में कुछ समय जाकर रहे थे। किन्तु अनुभव लेने कहीं पहुंचना और आप उन लोगों के बीच रहने के लिए ही लाचार और मजबूर हो इन दो स्थितियों में बड़ा अंतर है। पहली वाली स्थिति में आप बाहर के व्यक्ति माने जाते हो, दूसरे में आप उनमें से एक हो जाते हो। इस प्रकार हम कह सकते हें कि मटियानीजी का यथार्थ ''उनके द्वारा भोगा हुआ'' यथार्थ है। अत: हम उसे अपरागत (फर्स्ट हेण्ड एक्सपीरियन्स) अनुभव कह सकते हैं।

''गोपीभाव'' धारण करना और स्वयं एक गोपी होना इनमें अंतर तो रहेगा ही। मटियानीजी का अनुभव अनेक स्तरीय है। वे हिन्दुओं, मुसलमानों और ईसाईयों के बीच रह चुके हैं। हमने अपने इस प्रबंध में मटियानी जी की कहानियों के तीन संदर्भ लिए हैं- दलित संदर्भ, ईसाई संदर्भ और मुस्लिम संदर्भ। पिछले अध्याय में दलित-संदर्भ की कहानियों पर विचार हो चुका है, इस अध्याय में हम ईसाई संदर्भ की कहानियों पर विचार करेंगे।

(अ) ईसाई संदर्भ की कहानियाँ :-

हम पहले निर्दिष्ट कर चुके हैं कि कुमाऊं प्रदेश में ईसाई मिशनरी पादरी ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार बहुत पहले से ही कर रहे हैं। वे वहां के लोगों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, उन्हें शिक्षित बना रहे हैं, वहाँ स्कूल, कॉलेज और अस्पतालों की स्थापना कर रहे हैं। वहां के गरीब वर्ग के लोगों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाने का कार्य कर रहे हैं। हमारे यहाँ धर्म और शास्त्रों के नाम पर दलित और पिछड़े तबके के लोगों के साथ बहुत अन्याय हुआ। कइयों को तो अस्पृश्य करार दिया गया। उन पर अनेक प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा आर्थिक निर्योग्यताओं (डिसएबिलीटिज) को थोपा गया, फलत: जब उनको मौका मिला उन्होंने पहले इस्लाम और बाद में ईसाई धर्म को अंगीकार किया। उच्च-वर्ग के भी कुछ लोग जो पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता से प्रभावित हुए उन्होंने ईसाई धर्म को स्वीकार किया। हमारे यहां जातियों-उपजातियों की जकड़बंदी हैं, जो ऊंच-नीच का संस्तरण है और जिनके कारण आंतर्जातीय विवाहों में जो रूकावटें आती हैं उसके कारण भी धर्म-परिवर्तन हुआ है। ईसाई समाज में वैयक्तिक-स्वतंत्रता पर अधिक जोर दिया जाता है, फलत: अपने समाज में तरह-तरह के दबावों का अनुभव जो लोग कर रहे थे वे भी ईसाई धर्म की और आकृष्ट हुए हैं। दिनांक ८.७.२००६ के टाईम्स आफ इण्डिया में प्रथम पृष्ठ पर समाचार का शीर्षक है- ''इण्टर कास्ट

कपल्स गेट ऐस-सी (सुप्रिम कोर्ट) सपोर्ट''- इसमें एक स्थान पर जस्टिस अशोक भान और मार्कण्डेय कात्जु की खंड़-पीठ ने अपनी टिप्पणी इस प्रकार दी है....'' धेर इज नथिंग आनरेबल इन सच कीलिंग्स. इन फेक्ट धे आर नथिंग बट बार्बेरिक एण्ड शेमफुल एक्टस आफ मर्डर कमिटिड बाय ब्रुटल फ्युडल-माइण्डेड पर्सन्स हू डिजर्व हार्श पनिशमेण्ट. इफ द रिलेटिव्ज आफ यंग कपल डु नोट एप्रूव आफ द मैरिज, धे केन सीवीर टाईज विथ धेम, बट ये केन नोट गिव थ्रिटस आर कमिट आर इन्स्टिगेट ऐक्टस आफ वायोलन्स. एनीवन हू गिव्ज सच थ्रिटस इज टेकन टु टास्क बाय इन्स्टिट्यूटिंग क्रिमिनल प्रोसिडिंग्ज बाय द पुलिस अगेन्स्ट सच पर्सन्स।'' अर्थात् ऐसी हत्याओं (अंतर्जातीय विवाह करने वाले युग्मों की) की भर्त्सना होनी चाहिए। वस्तुत: इस प्रकार की हत्याएं जंगली हैं क्योंकि ये हत्याएं पाशवी और सामंतकालीन मनोवृत्ति के परिणाम है। यदि इस प्रकार की शादियों को संबंधी मान्यता नहीं देते हैं, तो वे ज्यादा से ज्यादा उनसे अपने संबंध नहीं रखेंगे, पर उनको किसी प्रकार की धाक-धमकी वे नहीं दे सकते, न किसी प्रकार की हिंसात्मक कारवाही कर सकते हैं। यदि कोई इस प्रकार की धमकी देता है या हिंसात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है तो पुलिस को चाहिए कि उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी फौजदारी कारवाही करे।'' यह हमारे देश की सर्वोच्च अदालत के दो गणमान्य न्यायाधिशों ने कहा हैं। इसका एक अर्थ तो यह निकलता है कि आजादी के इतने वर्ष बाद भी और एतद्विषयक अनेक कानूनों के रहते हुए भी अभी हमारा समाज पूर्णरूपेण लोकतांत्रिक-समान नहीं हुआ है और आज भी कुछ मामलों में हमारी सोच मध्यकालीन और सामन्तवादी मूल्यों से ग्रसित है। अभिप्राय यह कि ''प्रेम-विवाह'' करने वाले ऐसे कई युग्म कई बार ईसाई धर्म की और आकृष्ट होते हैं। स्वयं मटियानीजी के पिताजी ने अपने उत्तर-जीवन में ईसाई धर्म को अंगीकृत किया था।२ अब यहां हम कतिपय ईसाई-संदर्भ की कहानियों पर विचार करेंगे।

(१) मिसेज ग्रीनवुड :-

यह मटियानीजी की एक चर्चित कहानी है और उनके अनेक कहानी-संकलनों में यह संकलित है। यहां पर जो उद्धरण दिए गए है वह उनके ''सूखा सागर'' कहानी संग्रह से है। अल्मोड़ा के उत्तर की ओर सिंतोला बन पड़ता है। बांज, देवदार, चीड़ और काफल के घने वृक्षों से घिरे सिंतोला बन में ''मिसेज ग्रीनवुड'' अपनी छोटी सी ''ग्रीनवुड'' काटेज में रहती है। उनका मूल नाम तो मिस एण्डरसन था। संस्कार, शिक्षा और सौन्दर्य का त्रिवेणी संगम हमें मिसेज ''ग्रीनवुड'' उर्फ मिस एण्डरसन में मिलता है। सिंतोला के कृष्णभक्त भाई श्रीकृष्णप्रेम के दर्शन और कैलास की यात्रा की लालसा से मिस एण्डरसन कभी अल्मोड़ा आयी थीं। वहां ग्रीनवुड काटेज के ग्रीनवुड साहब से कुछ ऐसी माया व्यापी कि साठ साल के राबर्ट साहब और चालीस साल की मिस एण्डरसन सदा-सदा के लिए एक दूसरे के हो गये। सच्चा प्रेम किसी प्रकार की सीमाओं को नहीं मानता नहीं - उम्र की भी नहीं। और इस प्रकार मिस एण्डरसन मिसेज ग्रीनवुड हो गई। ग्रीनवुड साहब खीरी, लखिमपुर आदि जगहों पर डी.सी. रह चुके थे। और उसी पद से रिटायर्ड हुए थे। एक बार ग्रीनवुड साहब अल्मोड़ा के डी.एम.सर राबर्ट के आमंत्रण पर अल्मोड़ा के समीपवर्ती बिनसर के जंगल में शिकार खेलने आये थे। और तभी सिंतोला उनके मत को भा गया था। राबर्ट साहब से उन्होंने कहा था कि अपने एकाकी जीवन के अवकाश के दिन वे किसी ऐसी ही जगह पर बिताना चाहते हैं और राबर्ट साहब ने उनको तभी आश्वासन दे दिया था कि वे जब भी वहां बसना चाहें व्यवस्था हो जायेगी।

निवृत्त होने पर ग्रीनवुड साहब अल्मोड़ा आ गये। अल्मोड़ा आनेपर ग्रीनवुड साहब को सिर्फ बसने के लिए उपयुक्त भूमि ही नहीं, बल्कि अपने पद-मुक्त एकाकी बीहड़ जीवन की बोझिल असंगितयों को एक मधुर संतुलन देने वाली मिस एण्डरसन भी मिल गई। मिस एण्डरसन राबर्ट साहब के यहां मेहमान के रूप में रहती थी। इससे पहले ''सेंट जेवियर्स'' में ''नन'' थी।

उम्र ओर देह के तकाजे को वश में नहीं रख सकी, अत: फादर ने पवित्रता का प्रतीक छीनकर निष्कासित कर दिया था। तभी से वह प्रवासी जीवन व्यतीत कर रही थी। कैलास-यात्रा के लिए अल्मोड़ा आयी थी और यहीं उनकी मुलाकात ग्रीनवुड साहब से हो गयी। ग्रीनवुड साहब एक घनी सांझ को मिस एण्डरसन को साथ लिए सिंतोला बन के एक सुरम्य भूमि-खण्ड पर जा पहुंचे थे और जीवन-भर के रूखे-सूखे ग्रीनवुड साहब साठ साल की उम्र में छोटे-से बालक की तरह मिस एण्डरसन की छाती से लग गए थे। उस समय ग्रीनवुड साहब मिस एण्डरसन को कहते हैं-

"मिस, जब हम पैदा हुआ था, तभी एकदम अकेला था। हमारा बाप अंग्रेज, मदर हिन्दुस्तानी ब्रामिन था। परवरिश आंटी सोफिया ने किया। बहुत अच्छी तरह से किया, मगर हमेशा हम अकेला रहा। अकेले से हमारा मतलब, दूसरा लोग, कई लोंग हमको मोहब्बत किया, मगर हम किसी को मोहब्बत नहीं किया, पढ़ा-लिखा, तरक्की किया। साहब बना, सब कुछ किया, मोहब्बत नहीं किया। इधर अल्मोड़ा भी यही सोच के आया, पैदा हुआ तो अकेला था, मरता टाइम भी एकदम अकेला रहना मांगता। मिस, अपना आखिरी बखत निकालने के वास्ते हमको हिन्दुस्तान का पहाड़ी इलाका का अलावा कोई जगह पसन्द नहीं आता है। बोलो, ये जगह कैसा लगता है तुम्हारे दिल को, डियर?"[३]

इसके जवाब में मिस एण्डरसन ने कहा था-"अच्छा लगता, एकदम अच्छा-अच्छा, डियर!" तब ग्रीनवुड साहब ने कहा था - "बहुत अच्छा। तुम भी हिन्दुस्तानी बोलने को सकता। हमको बहुत खुशी। जिस जगह का ऊपर रहना, उस जगह का मिट्टी का जबान बोलने से इंसान को अपने को" "फारेनर", महसूस नहीं करता।...... इधर हम घर का माफिक रहेगा, मिस! मगर सिर्फ दो जना रहेगा, सिर्फ दो जना।"[४] यह कहते-कहते उनका गला भर आया था। जब मिस एण्डरसन ने पूछा कि सिर्फ दो जना क्यों, डियर? तब उसके उत्तर में साहब ने कहा था- "तीसरा जना नहीं होने

सकता, डियर! अकेला जिन्दगी काटने के वास्ते हम पहले बहुत गुनाह किया हिन्दुस्तानी औरत लोग के साथ।.... मगर बच्चा नहीं बनाने के वास्ते हम, ''आपरेशन'' कराया। अभी तीसरा जना नहीं होने सकता। बोलो, तुमको कोई एतराज होने सकता?.... याचना के बोझ से ग्रीनवुड साहब की आखें झुक गई थीं। मिस एण्डरसन ने ईसा मसीह के उपदेश पढ़ रखे थे किसी संतप्त आत्मा को संतोष और सुख पहुंचाना ही प्रभु को पाने का सबसे उत्तम मार्ग है।''[५]

मकान का नक्शा भी ग्रीनवुड साहब का था ''डियर, एक छोटा-सा तुम, एक छोटा-सा हम। बहुत बड़ा बंगला हमको ''सूट'' नहीं करने सकता। डाइनिंग-रूम का अंदर दो कुर्सी लगाएगा, दोनों जना बैठेगा, काफी पिएगा। बातचीत करेगा। खाना खाएगा, स्लीपिंग रूम के अंदर दो चारपाई लगाएगा, सो जाएगा। इस छोटे से बंगले का अंदर सिर्फ दो जना रहेगा, सिरफ दो जना।''[६]

और जब तीसरा जना आया तब ग्रीनवुड साहब परलोक सिधार गए। वह बच्चा भी नहीं रहा। मिस एण्डरसन, अब मिसेज ग्रीनवुड बिल्कुल अकेली रह गई। ईसा मसीह का कथन है कि मनुष्य की आत्मा के भीतर देवता और शैतान दोनों होते हैं। हररोज प्रातःकाल देवता को जगाओगे तो देवता जागेगा जो तुम्हें अच्छे कामों के लिए प्रेरित करेगा, और शैतान को जगाओगे तो वह जागेगा। जो तुम्हें पाप कर्म के लिए प्रेरित करेगा और ऐसा ही हुआ। साहब तो सबेरे देर से उठता था, लेकिन मेमसाहब सबेरे जल्दी उठकर नौकर शोबनसिंह को जगाने जाती थी, मानो राक्षस (शैतान) को जगाती थी। सूरज की पहली किरन के साथ रोज शैतान की आत्मा जागती रही और एक दिन प्रभु के वचन सत्य हुए। उसके कारण वह तीसरा आनेवाला था, पर साहब के वचन सत्य थे कि इस काटेज में केवल दो ही जन रहेंगे, सो साहब परलोक चले गए। बाद में बच्चा भी नहीं रहा। पर ग्रीनवुड काटेज में दो ही रहते हैं....मिसेज ग्रीनवुड और ग्रीनवुड साहब की आत्मा। शोबनसिंह को उन्होंने

कह दिया है.....''इस बंगला के अंदर सिर्फ दो ही जना रह सकता है ।.... शोबनसिंह भी समझदार है। मेम साहिबा के सिवा उसका भी कोई दूसरा आसरा नहीं। अब इस बुढ़ापे में वह बेचारा जाए भी कहां? बिल्कुल गुलाम की तरह सिर हिलाते हुए कहता है - अब तीसरा कोई नहीं आएगा, मेम साहब।'' मिसेज ग्रीनवुड भी उसे मुआफ कर देती है, क्योंकि उन्हें ''प्रभु के वचन याद रहते हैं। पाप को शरण मत दो, मगर पापी को शरण दो, क्योंकि वह भी उसी सर्वशक्तिमान प्रभु का पुत्र है ।''

मिसेज ग्रीनवुड के अंतर को पछतावे का ''कठफोड़वा'' निरंतर कुटकुटाता रहता है और अब जब कि मि. ग्रीनवुड ''फिजीकली'' नहीं है, तब वह उनके और भी करीब रहता है। वह ग्रीनवुड साहब की एकचीज, एक-एक कपड़े को सहेज कर रखती है, स्वयं अपने आप को भी । उनकी आत्मा का कुंदन पश्चाताप की अग्नि में तपकर और भी खरा हो गया है। एक शुक्रवार को जब मैडम ग्रीनवुड साहब के कपड़े ठीक कर रही थी, शोबनसिंह कहता है....''मेम साहब, बेकार में कपड़ा बर्बाद करने से क्या फायदा होगा ?'' तब मिसेज ग्रीनवुड उसे बुरी तरह से झिड़क देती है...'' ओ शैतान, हम भी तो बेकार में तुम्हारा साथ अपना जिन्दगी बरबार किया। हमको क्या मिलने सका ?... शोबनसिंह, साहब मर भी गया तो हमारा साहब है। तुम जिन्दा भी है, तो साहब का नौकर है। अपना औकात से ज्यास्ती मांगेगा, हम नहीं देने सकता।''[९] और अपनी ईर्ष्या और खीझ में शोबनसिंह जब साहब का राईसप्लेट तोड़ देता है, तब तो वह बुरी तरह से उस पर टूट पड़ती है....'' ओ तुम हिन्दुस्तानी कुत्ता ! यू इडियट ! तुम हमारा साहब से ''जेलसी'' करता है? तुम अपने औकात पर नहीं रहने सकता है? निकल जाओ हमारा बंगला के अंदर से निकल जाओ बोलता है, यू डोग ! गेट आउट एटवंस । निकलो, नहीं तो हम तुमको शूट करने देगा ।[१०] शोबनसिंह घृणा और क्रोध के साथ मैड़म को गाली देते हुए निकल जाता है....'' गौरी चुड़ैल । आज से मेरे बंगले के अंदर थूकने को भी नहीं आएगा ।''[११]

मिसेज ग्रीनवुड ''राइस-प्लेट'' के टुकड़ों को किसी तरह जोड़कर आलमारी में रखने जाती है कि ईसा-मसीह का आदमकद चित्र नीचे गिर जाता है और साथ ही ''डिनर-सेट'' का एक-एक ''पीस'' टूटकर विखर जाता है। मिसेज ग्रीनवुड चित्र को दीवार से खड़ा करके प्रभु ईसा-मसीह के पांवों पर सिर रखकर बिल्कुल नादान बच्ची की तरह बिलखकर रोने लगती है...'' ओ माय गोड! अभी हम क्या करने सकता ? इंसान हमको तकलीफ दिया, हम उसको घर से बाहर निकाल दिया ...मगर तुम खुदा होकर उससे भी बड़ा तकलीफ दिया, तुमको कैसे घर से बाहर निकालने सकेगा ?''[१२] इस प्रकार यह एक ईसाई-संदर्भ की कहानी है। मिसेज ग्रीनवुड एक धार्मिक वृत्ति की महिला है। सच्चे अर्थों में वह धार्मिक है । अपने पूर्व-जीवन में वह ''नन'' रह चुकी है, अतः कहानी में जगह-जगह पर ईसा-मसीह के वचन मिलते हैं। उनका जो विचलन है वह मानव-सहज कमजोरी के कारण है। किन्तु बाद में उसका पछतावा भी उन्हें होता है। उसके लिए लेखक ने ''कठकोड़वा'' का प्रतीक लिया है। मि. ग्रीनवुड अपने कोकाफल के गाछ पर की अमरवेल के रूप में बताते हैं। यह भी एक प्रतीक है। अमरवेल की जड़ें नहीं होती पर वह पूरे वृक्ष पर छा जाती है। मिसेज ग्रीनवुड ही मानों वह काफल का वृक्ष है। मटियानीजी के अमर नारी पात्रों में मिसेज ग्रीनवुड प्रथम पंक्ति में अपना स्थान बना लेती है।

(२) झुरमुट :-

यही कहानी अन्यत्र ''कठकोड़वा'' शीर्षक से भी प्रकाशित है। इस कहानी में भी ईसाई-संदर्भ प्राप्त होता है। कहानी नायक धरणीधर (डी.डी.) उप्रेती सुप्रिया मसी के रूपाकर्षण से मुग्ध होकर अपनी पत्नी तारा पंडितानी को छोड़कर ईसाई धर्म अंगीकार कर लेते हैं। सुप्रिया धरणीधर की छात्रा थी । सुन्दर, स्मार्ट और फराटेदार अंग्रेजी बोलने वाली सुप्रिया डी. डी. के मन का कब्जा ले लेती है। इस प्रकार धरणीधर पंड़ित का ईसाई

होना, इसा के खातिर नहीं, सुप्रिया के आकर्षण के कारण होता है। शुरू-शुरू में उनको बड़ा अच्छा लगता है। चर्च जाना, प्रार्थना करना, ईसा-मसीह के उपदेश सुनना आदि, लेकिन यौवन के दौर के गुजर जाने पर और रूपाकर्षण के उस ज्वार के थम जाने पर पंड़ित धरणीधर के पुराने संस्कार जोर मारते हैं। प्रस्तुत कहानी उन पुराने संस्कारों के जोर मारने की और उसके कारण डी.डी. के मन में उठने वाले उहापोह की कहानी है। कमरे के बाहर मिस्टर डी. डी. मसी के नाम की प्लेट लगी हुई है, परन्तु कमरे के भीतर बैठा हुआ आदमी तो पंड़ित धरणीधर उप्रेती ही है। डी.डी. को अब लगने लगा है कि जिन ओढ़े हुए संस्कारों के कारण उनको तारा पंड़ितानी कभी अपने लिए अनुपयुक्त और आर्थोडोक्स लगती थी, उन्हीं के कारण अब खुद स्वयं को सुप्रिया मसी के लिए फालतू अनुभव होने लगी है। धरणीधर निवृत्त हो गए हैं। सारा-सारा दिन घर में बैठे रहते हैं। सुप्रिया अभी जवान है, कामकाज करती है, बाहर जाती है, अत: शंका का एक कीड़ा भी पंड़ित को रात-दिन कुटकुटाता है। हालाँकि सुप्रिया मसी धार्मिक विचारों वाली एक पवित्र औरत है । वह धरणीधर को आज की खूब चाहती है। पर धरणीधर पर अब पुराने संस्कार हावी हो जाते हैं। उन्हें मंदिर, श्लोक, विष्णुसहस्रनाम का पाठ यह सब अब बहुत अच्छा लगने लगा है। अत: उनका मनस्ताप, कठकोड़वा पंछी की चोंच की तरह अपने शिखाहीन मस्तक की पोली सतह को कुटकुटाता रहता है।[१३]

वैसे भी बुढ़ापे में आदमी अतीतजीवी और स्मृति-जीवी हो जाता है। धरणीधर उप्रेती का भी वही हाल होता है। एक स्थान पर वे सुप्रिया को कहते हैं.....''मैं कुछ नहीं जानता, कब, कैसे शुरूआत हो गई। जैसे कोई कब्र में का मुर्दा उठ खड़ा हुआ हो जैसे कोई पूर्व-जन्म का प्रेत जागता गया और जो कर्म-काण्ड-मंत्र पाठ बाठ में बह गए थे, जाने फिर कब अपनी जगह वापस आते चले गए। कब प्रभु ईसा की सुभाषितों की जगह ''दुर्गा सप्तशती की ''या देवी सर्वभूतेषु'' में चित्त शांति अनुभव करने लगा।.. कब तारा

को लागने की बात ने ''पापोहं पापकर्मोहं'' की ग्लानि में ला पटका.... कुछ नहीं जानता, सुप्रिया तुम्हारी ओर एक बाढ़ में बहा था...दूसरी एक बाढ़ आई, तुमसे पीछे हटना शुरू होता गया। आई एम ए गिल्टी परसन, सुप्रिया। आई हैव डिसीव्ड बोथ आफ यू सिंसियर वूमेन। क्रिश्चियनिटी हेज आल्सो लूज्ड इट्स मीनिंग फार मी।''[१४]

धरजीधर की कहानी पढ़कर गुजराती के कवि मणिशंकर रत्नजी भट्ट ''कान्त'' की स्मृति मानस में कौंध जाती है। उन्होंने भी पहले ईसाई धर्म अंगीकार किया था, बाद में पुन: वे भी हिन्दुत्व की ओर लौट आए थे। जिस प्रकार के उहापोह से धरणीधर गुजरते हैं, लगभग उसी प्रकार के उहापोह से कान्त भी रूबरू हुए हैं। एक स्थान पर वे सुप्रिया से कहते हैं.... ''मैं जितना कृतज्ञ तारा के प्रति हूँ, उतना ही तुम्हारे प्रति भी। दोनों से ही मैंने बहुत-से सुख पाये। तुम दोनों का उतना ही अपराधी भी हूँ। तारा बच्चों के पिता के दायित्व को भी खुद ही निबाहते हुए, मेरे अपराध क्षमा करती गई है। तुम भी मुझे क्षमा कर सकती हो, अपने लिए किसी अनुकूल को चुनकर। ऐसी स्थिति में भी मुझसे बड़ी ही रहोगी, सोनी, क्योंकि तुम अपनी ही दृष्टि में नही गिरी हो। सच पूछो तो मैं अब सन्यास ले लेना चाहता हूं! सोनी अब अपनी व्यर्थता को और ज्यादा ढोया नहीं जाता।''[१५]

इस प्रकार कहानी में दो स्त्रियों की कारुणिक स्थिति को उकेरा गया है। तारा पंडितानी को युवानी में अनाथ कर दिया था, तो सुप्रिया मसी को बुढ़ापे में अकेला बनाने की पंडितजी सोच रहे है। धरणीधर ने तब तारा पंड़ितानी के साथ अन्याय किया था, पाप किया था, अब सुप्रिया के साथ वैसा ही अन्याय करने जा रहे हैं। अनुकूल पात्र चुन लेने की बात तो पंडितजी करते हैं, पर वह सुप्रिया जैसे पाक-दिल औरत के लिए संभव नहीं हैं। डी.डी. की इस तरह की बात को सुनकर सुप्रिया कहती है-''डी.डी. छिच्छी, तुम औरतों की तरह क्यों रोते हो? मैं कल से मि. रंधावा के घर नहीं जाऊंगी। मैं कल से तुम्हें कोई शिकायत नहीं होने दूंगी, बस, कहो तो

यह नौकरी छोड़ दूं? तुमने आज तक चुप रहकर और अपनी तकलीफों को खुद ही पीकर, मुझे भी तो बहुत लापरवाह बना दिया, डी. डी.। प्लीज, एक्सक्यूज मी।''[१६]

ठीक इसी बिन्दु पर सुप्रिया मसी के आत्म गौरव का हमें पता चलता है। वह धरणीधर के प्रति कितनी स्नेहार्द्र और संवेदनशील है, इस बात की प्रतीति यहाँ होती है। कहानी ईसाई-संदर्भ की है। साथ में धर्म-परिवर्तन का मुद्दा भी जुड़ा हुआ है। धरणीधर उप्रेती से डी.डी. मसी हो जाते हैं, इस घटना का यदि विश्लेषण करें तो इसके उत्स हमें पहाड़ी-समाज की सामाजिक रूढियों में मिलेंगे । धरणीधर अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त युवक हैं परन्तु उनका विवाह बचपन में ही तारा पंडितानी से होता है जो उतनी शिक्षित नहीं है। अत: इसे हम अनमेल विवाह कह सकते है। इसके कारण ही धरणीधर सुप्रिया की और आकर्षित होते हैं। दूसरे प्रस्तुत कहानी में हमें ईसाई- धर्म में परिव्याप्त करुणा का अभिलक्षण भी दृष्टिगोचर होता है। कहानी में ईसाई-धर्म से जुड़ी हुई शब्दावली भी मिलती है।

(३) दीक्षा :-

''दीक्षा'' कहानी भी धर्मान्तरण के ''थीम'' पर आधारित है। यह कहानी भी मटियानीजी के कई कहानी-संकलनों में संकलित है-जैसे, ''सूखा सागर'', ''अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ'' आदि। यहाँ जिन उद्धरणों को लिया है वे ''सूखा सागर'' से है । कहानी की नायिका सावित्री नामक एक दलित स्त्री हैं। उसका पति हैजे में मारा गया है । उसका पति जब हैजे में मर गया तो अपनी पति-निष्ठा को प्रमाणित करने के लिए वह चुऐ में कूद पड़ी थी। यहां लेखक ने बहुत ही तटस्थता और ईमानदारी के साथ मनुष्य की जिजीविषा का चित्र भी अंकित किया हैं-''... और उसे याद है अपने उस अंधेरे कुंए में से जीवित बच निकलने के लिए उसने जिस तरह एक-एक देवता की मनौती मानी थी - उतने भीषण मृत्यु-भय, जीने की उतनी लालसा

को उसने इससे पहले कभी अनुभव नहीं किया था।...उसे याद आया कि कुएं से बाहर निकाल लिए जाने पर उसने चाहा था कि वह दुबारा कूद पड़ने की कोशिशें लोगों को दिखाएं, मगर उससे कुछ भी संभव नहीं हुआ था, सिर्फ फफक-फफककर रो पड़ने के।''[१७]

मनुष्य की जिजीविषा का बड़ा ही बेबाक और सांकेतिक चित्रण यहां मटियानीजी ने किया है। इससे एक बात को प्रमाणित होती है कि आत्महत्या करने वाला व्यक्ति पहले तो अपने भावावेश में सचमुच का प्रयत्न करता हैं, पर उस किया के बाद, वह जीने के लिए भी खूब छटपटाता है, क्योंकि मृत्यु का साक्षात्कार उसे जीने का मतलब समझाता है। हमारे यहाँ कभी सती-प्रथा थी। आज भी ऐसी कुछ छिटपुट वारदातें कभी-कभी होती रहती हैं। वहाँ पर भी ऐसा माहोल खड़ा कर दिया जाता है कि उसके नशे में वह विधवा स्त्री सती होने के लिए राजी हो जाती है, परन्तु बाद में पति की चिता पर उसे लिटाया जाता है और जब उसे आग के हवाले दिया जाता है, तब बाहर निकलने की वह बहुतेरी चेष्टाएं करती हैं, परन्तु डायू उसे निकलने नहीं देते।

लोग उसे बचा तो लेते हैं, पर उसके बाद की उसकी जिम्मेदारी लेने के लिए कोई भी सामने नहीं आता। ऐसी आश्रयहीनता की स्थिति में वह मिशनरी लोगों से मिलती है। शायद वह काफी सुंदर और आकर्षक भी रही हो, तभी मि. गोम्स उसे अपने यहां रख लेते हैं। आज उसका ''बपतिस्मा'' होने वाला है। ईसाई-धर्म में ''बपतिस्मा'' के बाद व्यक्ति सचमुच का ईसाई होता है। हिन्दुओं में ''यज्ञोपवित'' या ''जनेऊ'' होता है। पर वह स्त्रियों का नहीं होता। दलित जातियों का भी नहीं होता। यहां स्त्रियों का भी ''बपतिस्मा'' होता है।

''बपतिस्मा'' के लिए उसे स्कर्ट और स्लीवलेस ब्लाउज पहनाया जाता है। इन कपड़ों में उसे बहुत लाज आती है और उसे बड़ा अटपटा भी लगता हैं, तभी मिस डौली-मिस गोम्स, मि. गोम्स की बहन से वह कहती है....''मिस साब, हमको एक धोती दिलवा देना।''[१८] उसके जवाब में मिस

गोम्स कहती है....''ओह माय डियर, हाऊ इनोसेन्ट यू आर।....अभी जरा आइने में तो देखो अपनी सूरत....कोई इमेजिन भी नहीं कर सकता कि इन कपड़ों में तुम इस कदर चार्मिंग दिखने लगोगी।''[१९] जब सावित्री कहती है कि मिस साब हमको इन कपड़ों में बहुत शर्म आती है, तब मिस गोम्स कहती हैं-''सुनो डियर, आज तुमको ''होली बाथ'' लेना है। तुम्हारा ''बपतिस्मा'' होना है। वो सिर्फ इसी ड्रेस में होगा। धोती, पेटीकोट में नहीं। समझीं ?''[२०]

आगे मिस गोम्स कहती है- ''उठो तुमको ब्रेसरी और अण्डरवियर दे दें। अगर तुम चाहोगी, तो कल से साड़ी पहन कर रहना। मगर टु डे इट इज कम्पलसरी - समझीं?''[२१] यहां मिस गोम्स सावित्री को यह भी संकेत दे देती है कि शीघ्र ही वह मिसेज गोम्स हो जायेगें, अर्थात् उनके भाई से उसकी शादी हो जाऊंगी। यहां लेखक ने ईसाईयों के कुछ स्वच्छंद व्यवहार को भी सांकेतिक ढंग से रूपायित किया है। कहानी में एक स्थान पर कहा गया है - '' गांव में वह कितनी वाचाल थी।... वहां मिलती मिस गोम्स, तो शायद, वह निस्संकोच कहती कि मिस साब, औरत को धर्म उसका मर्द होता है। हाय राम, मैं कहां जानती थी कि वह मुंछकटे एक रात भी सब्र नहीं रखेगा।[२२] यहां मुंछकटों से सावित्री का मतलब मि. गोम्स ही है। आगे यहां कहा गया है- ''आज मिस गोम्स के बड़े भाई मिस्टर गोम्स के ''क्वार्टर से बाहर निकलते हुए, वह चाहती थी कि खूब स्वच्छतापूर्वक कहीं नहा ले। उसे बार-बार यह महसूस हो रहा था, जैसे कोई अजीब-सी गंध उसकी देह के साथ सटी हुई है। उससे मुक्त हुए बिना किसी धार्मिक संस्कार को ग्रहण कर पाना कठिन होगा। मगर उसे कल ही बता दिया गया था कि आज उसको पवित्र स्नान करना होगा।''[२३] दूसरे निम्नलिखित कथान भी इसका संकेत देता है कि उसने सावित्री के साथ कुछ किया है। और उसमें मि. गोम्स की कनफेस वाली बात यथा - ''चांदनी रात के सन्नाटे में संत माता के गिरजे के अत्यंत मधुर ध्वनियाँ गुंजाते हुए गजर कोसुनते ही, मिस्टर गोम्स अपनी चारपाई पर

से नीचे उतरकर, जमीन पर बैठ गये थे। हवा में अत्यंत विचित्र ढंग से उन्होंने हाथों को फैलाया था और कहा था- ''हमको माफ करना, माई गोड... हमको माफ करना संत पिता पाल...ओह, हम जरूर करेगा।... कल प्रार्थना दिवस में हम जरूर कनफेस करेगा।''...सावित्री बातें नही समझ पायी थीं, मगर उसे इतना जरूर अनुभव हुआ था कि यह शख्स अपनी कुछ देर पहले की हरकतों के सिलसिले में ही हाथों को बार-बार छाती के आर-पार ले जा रहा है।''[२४]

संक्षेप में कुल कहानी इतनी है कि सावित्री का पति है जे मर कर गया है। उसके विरह में सावित्री आत्महत्या करने के लिए कुंए में कूद पड़ती है। उसे लोगों द्वारा बचा लिया जाता है। पर उसके बाद की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता। सावित्री बिलकुल निराधार और निराश्रय है। उसको आश्रय मिस्टर गोम्स के यहां मिलता है, पर शायद उसकी बड़ी कीमत भी उसे चुकानी पड़ती है। ईसाई धर्म अंगीकार करना पड़ता है।

'झुरमुट' या 'कठफोड़वा' कहानी के धरणीधर उप्रेती भी ईसाई हो जाते हैं, पर उसके पीछे यौवन का उन्माद कारणभूत है। सुप्रिया मसी का आकर्षण उनसे यह करवाता है। किन्तु यहां सावित्री की स्थिति कुछ दूसरे प्रकार की है। आश्रयहीनता की स्थिति उसके लिए जिम्मेदार है। हिन्दू धर्म के तथाकथित ठेकेदार उसके लिए जिम्मेदार हैं। ठीक इस बिन्दु पर यह कहानी 'गोपुली गफूरन' से भी मेल खाती है। फर्क इतना है, गोपुली इस्लाम कबूल करती है, सावित्री ईसाई बनती है। गोपुली मजबूरी में, पर अपने पूरे होशोहवास में, गोपुली शिल्पकारिन से गोपुली गफूरन हो जाती है। उस ऐसा अपने दो बच्चों के पालन-पोषण के लिए करना पड़ता है। सावित्री के सामने कोई दूसरा चुनाव ही नहीं है।

सावित्री के भीतर के उहापोह का संकेत कहानी में कहीं-कहीं बहुत ही संकेतात्मक ढंग से लेखक ने दिया है। यथा - ''उसे इस अनुभूति ने थोड़ा विचलित कर दिया था कि उसका ''बपतिस्मा'' होने वाला है और उसके

बाद वह दूसरे धर्म में हो जाएगी।[२५]... पेट भरने की चिन्ताओं से मुक्त हो जाने के बाद, ऐसी कोई चीज उसके सामने नहीं रह गई थी, जिसे वह साफ-साफ दु:ख कह सके।...मगर इसके बावजूद, उसको लग रहा था कि वह फफक-फफक कर रो पड़ना चाहती है। वह एक ऐसी यातना से गुजर रही थी, जिसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है, पहचाना नहीं जा सकता।[२६]... सिर्फ ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त आश्रयहीनता के भयावने अंधकार से मुक्त करने वाला कोई नहीं है। उसको अत्यंत विह्वलता के साथ अपने गांव की हनुमानजी की मूर्ति याद आने लगी... सम्पूर्णता में सिन्दूर से सनी, हुई।[२७].. और आश्रयहीनता की भयावनी हताशा से मुक्ति के अहसास के बावजूद, वह अपने, समूचे शरीर में एक अजीब सी थकान अनुभव करने लगी है।''[२८]

उपर्युक्त वाक्यों से सावित्री के भीतर धर्मान्तरण के कारण जो मानसिक उहापोह है, वह अभिव्यक्त हुआ है। किन्तु सावित्री स्वयं उसको समझ नहीं पा रही है, सिर्फ अनुभव कर रही है। एक अजीब किस्म की बेचैनी उसके मन में है। यह बेचैनी अपनी जड़ों से उखड़े जाने के कारण है। अपने ''रूट'' से अलग होना कितना तकलीफदेह हो सकता है, इसका बड़ा ही कलात्मक और तटस्थ चित्रण मटियानीजी ने यहां किया है।

कहानी में ईसाई-परिवेश के उपयुक्त शब्दावली और वाक्यों का प्रयोग मिलता है, जैसे- 'बपतिस्मा', 'होली-बाथ' या 'पवित्र-स्नान', ब्रेसरी, 'कनफेस' 'संत-पिता' आदि-आदि। कुछेक वाक्य भी मिलते हैं, जैसे...''दु:ख इंसान को प्रभु के निकट ले जाता है।''[२९] बपतिस्मा के समय की प्रार्थना भी ईसाई-परिवेश के उपयुक्त ही है - तू सर्व-शक्तिमान है/ मैंने तुझे प्रभु के रूप में जाना है/ .. .और मैं तुझ पर / और मैं तेरे वचनों पर/ जो कि तूने इस संसार में/ सबको पाप और डर/ और दु:खों से/ मुक्त करने के लिए किए है / मैं तेरे वचनों पर ईमान लाती हूं / तू सर्वशाक्तिमान है।''[३०] कहानी का अंत इन वाक्यों के साथ होता है-''हालाँकि अब निश्चित है कि सिर्फ थोड़ी-सी ही प्रतीक्षा शेष रह गई होगी। और उसके बाद....''[३१]

प्रस्तुत कहानी हमारे मन में कई प्रश्नों को जगाती है- एक कहानी धर्मान्तरण की है, पर सवाल यह खड़ा होता है कि कोई भी व्यक्ति अपना धर्म-परिवर्तन क्यों करता है? दो, कुछ हिन्दुत्ववादी लोग और संगठन ईसाईयों के इस धर्मान्तरण की प्रक्रिया की निंदा करते हैं, पर क्या उनके पास दीन-हीन आश्रयहीन, पापी समझे जाने वाले लोगों के साधन और समय है? तीन, मि. गोम्स जाति आदि की बात एक तरफ रखकर सावित्री को अपनाने के लिए तैयार हो जाते हैं, क्या कोई उच्चवर्णी युवान हमारे यहाँ ऐसे काम के लिए आता है? चार, क्या हम अपनी जाति-प्रथा को छोड़ने के लिए तैयार है? पांच जिस वर्ण-व्यवस्था को आदर्श माना गया है? क्या उसने हमारे सचमुच में वह आदर्श व्यवस्था है? क्या उसने हमारे देश और समाज को विभक्त नहीं कर दिया है?

सच्ची और उच्च कला पाठक के मन में प्रश्नों को उकेरती है। उसके तन-मन को बेचैन कर देती है और इस दृष्टि से इस कहानी को सदैव याद किया जाएगा।

(४) चुनाव :-

''चुनाव'' भी एक ईसाई-संदर्भ की कहानी है। यह कहानी भी मटियानीजी के कई कहानी संकलनों में उपलब्ध होती है। यहां हमने जिन उद्धरणों को लिया है वे ''सूखा सागर'' कहानी संकलन से है। कहानी कृष्णानंद पंडित और कमला शिल्पकारिन की है। इसका परिवेश एक तरफ जहां कुमाऊं प्रदेश है, पहाड़ है, वहां दूसरी तरफ लखनऊ है। कृष्णानंद पंडित और कमला में प्रेम संबंध है। यह संबंध शारीरिक प्रेम तक जाता है और उसके कारण कमला को पंडितजी का गर्भ रह जाता है। दोनों को समझ में नहीं आता क्या किया जाए। यों तो कमला कहती है कि अपनी समस्या वह स्वयं हल कर लेगी, चाहे सारे लोकोपवाद झेलकर, चाहे, आत्महत्या करके, मगर कृष्णानंद की आत्मा उसके इतने बड़े त्याग और अपनी इतनी बड़ी

कायरता को स्वीकार करते हुए हिचकिया रही थी। "कमला के साथ दायित्व का ही नहीं बल्कि शकरकंद के पौधों की तरह कहीं अन्दर-ही-अन्दर एकदम गहरे में फैले हुए प्यार का भी प्रश्न है जिसे अपने ही हाथों अपने अंदर से उलीच-उलीच कर फेंक पाना संभव नहीं लगता है। कल जब अपनी मां बनने की स्थिति बताने कमला उसके सामने आ खड़ी हुई थी, और आनेवाले शंकाकुल भविष्य को आंखों में उतारकर, स्वयं आत्महत्या करके भी कृष्णानंद को निरापद रखने का आश्वासन देने लगी थी, तो कृष्णानंद को लगा था आत्महत्या कर लेने के बाद दूसरे की देह को इतना तुच्छ समझा जा सकता है कि अपनी सुरक्षा के लिए दूसरे की आहुति को स्वीकारा जा सकें। कहीं अपने अंदर, के सारे मनुष्यत्व और सारे प्यार की हत्या करने के निश्चय को स्वीकारने की कठोरता के बाद ही, कमला की इस स्थिति के प्रति अपने दायित्व को नकारा जा सकता है।"[३२]

इस प्रकार कृष्णानंद के मन में काफी अंतःसंघर्ष चलता है। कभी समाज, गांव, बिरादरी और दुनियादारी जीतती है, कभी इन सबको दरकिनार कर उसकी अंतरात्मा उसे पुकार-पुकार कर कहती है कि उसे हर हालत में कमला के प्रेम और उससे जुड़े दायित्व को स्वीकारना होगा। और अन्ततः कृष्णानंद की अंतरात्मा जीतती है। किन्तु कमला के साथ अंतर्जातीय विवाह करके गांव में रह पाना उसे नामुमकिन-सा लगता है, क्योंकि पहाड़ी-समाज वैसे ही बहुत रूढिचुस्त होता है। दोनों की जाति में भी काफी अंतर है। कृष्णानंद पंडित है, ब्राह्मण है, यजमानी करता है और कमला शिल्पकारनी है, अर्थात् दलित जाति की। गांवों में इस प्रकार के विवाह को कभी स्वीकार नहीं किया जाता। दूसरे इसके बाद की फजीहत को झेल पाना उसे बड़ा मुश्किल लगता है। फलतः दोनों शहर भाग जाने का निर्णय करते हैं। कृष्णानंद ने अपने गांव में एक बार लखनऊ शहर का नाम सुन रखा था अतः वे दोनों भागकर लखनऊ पहुंच जाते हैं।

यहाँ पर अचानक उसे पादरी जानसन चौहान दिख जाते हैं। पादरी

जानसन कभी उनके गाँव के शिल्पकार मुहल्ले में आये थे और तब पादरी साहब का व्याख्यान उसे-हास्यास्पद और फालतू लगा था। पादरी जानसन का मजाक उड़ाने के लिए कृष्णानंद ने बीच में कुत्ते और सियार की जैसी आवाजें निकालने और "ईसाई बनाता है क्रिस्तान, खींचों-खींचों इनके कान" के नारे भी लगाए थे। अपनी उस मूर्खता पर उसे अब पछतावा होता है। कृष्णानंद ने तब सुना था - "मसीह की शरण में आने वाले बड़े-से-बड़े पापी को मुक्ति मिल जाती है। पहाड़ी इलाकों में जातीय संकीर्णता फैली हुई है, उसके दुष्परिणामों से भी छुटकारा तभी मिल सकता है, जब प्राणी मसीह के धर्म-संस्थान गिरजे में जाकर अपनी 'गवाही' देता है।"[३३] कृष्णानंद को अपनी समस्या का समाधान इन बातों में मिलता है और वह सोचता है कि यदि वह ईसाई-धर्म को स्वीकार ले तो पादरी साहब उन दोनों के लिए मिशन की ओर से व्यवस्था करवा देंगे।

कृष्णानंद पादरी जानसन चौहान को मिलता है और अपनी रामकहानी बयान करता है। पादरी जानसन खुद कभी किसी अछूत कन्या को प्यार करने के दण्डस्वरूप अपने चौहान-वंश को तिलांजलि देकर ईसाई धर्म में दीक्षित हो चुके थे, अत: कृष्णानंद की करूण स्थिति उनके लिए अनुनमेय नहीं थी। दोनों की आत्मगाथा और स्थिति से पूर्णत: परिचित हो जाने पर गहन आत्मीयता और दया भाव के साथ पादरी साहब ने प्रभु ईसा की महिमा का बखान करना शुरू किया। कृष्णानंद को लगा, "उसकी आत्मा कुम्हार के चाक पर थोपी गई गीली मिट्टी की तरह चक्कर काटती चली जा रही है।"[३४] पादरी साहब ने उस पर दया करके मिशन में शरण देने की बात खुद कही, उनकी यह आयाचित-अनुकम्पा के प्रति नतमस्तक हुआ कृष्णानंद। उसने कमलासहित ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेने की शपथ ले ली। मिशन कम्पाउण्ड में एक कोठरी में उनको रहने के लिए जगह दे दी गई। मिशन स्कूल में कृष्णानंद को चपरासी की नौकरी भी मिल गई। कमला को पादरी साहब की कोठी पर छोटे-मोटे कामों के लिए रख लिया गया।

उसके बाद पादरी साहब ने कृष्णानंद को एक छोटी-सी पुस्तिका पढ़ने के लिए दी थी। किसी सिख सज्जन द्वारा ईसाई धर्म पर लिखी हुई धार्मिक पुस्तिका थी वह। उसमें आरंभ में ही लिखा हुआ था.... "तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना और नियुक्त किया है। युहन्न (११ : १७)"[३५]

कृष्णानंद और कमला का बपतिस्मा होता है। बपतिस्मा के बाद कृष्णानंद के-एन-क्रिस्ती और कमला, शिल्पकारनी कैथेरिन क्रिस्टी या मिसेज क्रिस्टी के नाम से जाने जाते हैं। दो साल गुजर जाते हैं। कमला पर अब कैथरिन का रंग चढ़ने लगता है। स्लीवलेस, लो कट ब्लाउज और घुटनों से ऊपर-ऊपर तक के स्कर्ट में गोरी-उजली और खूबसूरत कैथरिन सतरंगी तितली के मानिंद चमकने लगती है। कृष्णानंद मिशन गर्ल्स हाईस्कूल में चपरासी की नौकरी करता है। कैथरिन अब अंग्रेजी पढ़ने और बोलने लगी है। जब वह पादरी साहब की बच्चियों को छोड़ने के लिए स्कूल जाती है तब कृष्णानंद को देखकर शरारत-पूर्वक मुस्कारते हुए उसे "गुडमारनिंग" कहती है। कृष्णानंद सोचता है कि कमला शिल्पकारनी जिस तेजी से कैथरिन किस्ती बनती चली जा रही है, उतनी ही तेजी से वह कृष्णानंद-का-कृष्णानंद ही रहता चला जा रहा है और इस प्रकार उन दोनों के बीच की दूरियों बढ़ती जा रही हैं। कमला का बच्चा अधूरे महीनों में पैदा होता है और चला जाता है, बल्कि उसे मृत बच्चा ही पैदा होता है। अतः कमला और कृष्णानंद के बीच जो एक सेतू था वह भी टूट जाता है। कैथरिन अब के.एन. को अपने पास सोने नहीं देती है। कभी-कभी वह रात को भी नहीं लौटती, जब लौटती है तो अलग चारपाई पर लेट जाती है।" कृष्णानंद निरंतर खोखली पड़ती जा रही आंखों से एकटक घूरने लगता है, तो "नो नो" पंडित कहते हुए वह शरारतपूर्वक हंस देती है।

कैथरिन अब शाम को बैडमिंटन खेलने चली जाती है। कृष्णानंद के सामने ही कैथरिन कई बार पादरी साहब के भतीजे विलसन चौहान के साथ हाथ में हाथ डालकर बैडमिंटन खेलने जाती है। वह अपने सिरहान अब

विलसन की तस्वीर भी रखने लगी है। कृष्णानंद कमला में आए इस परिवर्तन को बराबर महसूस कर रहा है और खून के घूंट पीकर रह जाता है। गांव में वह पंडित था, ब्राह्मण-ठाकुर था, ऊंची जाति का था और कमला एक शिल्पकारन, परन्तु अब स्थिति बदल गई है बल्कि उलट गई है, वह पंडित से चपरासी हो गया है और कमला अब ऊंचे लोगों के साथ बैठने उठने लगी है।

कैथरिन के साथ अपनी उपस्थिति कृष्णानंद को खुद अब खटकने लगी है। अत: पादरी साहब जब उसे अपने साथ धर्म-यात्रा पर धर्म-प्रचार हेतु ले जाने की बात कहते हैं, तब वह उस प्रस्ताव को चुपचाप स्वीकार कर लेता है । बल्कि कहना चाहिए कि इसके अलावा उसके पास कोई दूसरा विकल्प भी नहीं था । धर्म-प्रचार यात्रा के उपरान्त कृष्णानंद ने पाया कि उसकी चारपाई अब कब्रिस्तान के चौकीदार मिस्टर गुडविल के कमरे में डाल दी गई थी । मिस्टर गुडविल के साथ रहते हुए ही उसे सूचना मिली कि अगले क्रिसमस के बाद ही कैथरिन मिसेज विलसन चौहान बनने वाली है । यों इस बात की पूर्व-सूचना तो कृष्णानंद की आत्मा यात्रा पर जाते हुए ही उसे दे चुकी थी ।

पादरी साहब मि. के.एन. क्रिस्ती को प्राय: उपदेश देते हुए कहते हैं- "प्रभु उन सभी लोगों पर प्रसन्न रहते हैं, जो ईर्ष्या-द्वेष से मुक्त और सहनशील है। जो अपने जीवन के तमाम सत्यों को सहजभाव से स्वीकारते है और उन्हें प्रभु की शरण में समर्पित करके, खुद मुक्त हो जाते हैं। .... अपनी आत्मा के अनुसार आचरण की पूरी आजादी देना ही सच्चा मनुष्य धर्म है। धर्म इस बात की पूरी-पूरी आजादी देता है.... औरत अपने लिए अनुपयुक्त प्रेमी या पति को तलाक देकर, उपयुक्त और सही प्रेमी या पति का चुनाव कर ले।"[३६]

पहले कृष्णानंद फादर की बातों को ध्यान और श्रद्धा से सुनता था, पर इधर उसकी श्रद्धा विचलित होने लगी थी । फादर की ऐसी बातों से अब कृष्णानंद को वितृष्णा होने लगी थी । वह फादर को कहना चाहता है कि

प्रभु ने नहीं, बल्कि उसने ही अपने लिए उसको चुना था, अपना नौकर बनाने के लिए। और कमला को भी उसने ही चुना था, अपने भतीजे के लिए। अत: कहानी के अंत में हम पाते हैं कि कृष्णा आत्महत्या कर लेता है। कमला शिल्पकारनी की किनारीदार धोती की फांसी लगाकर उसने आत्महत्या की थी। कैथरिन आज फिर बिलकुल कमला शिल्पकारनी की तरह रो रही थी। कृष्णानंद की चारपाई पर बिछा हुआ अपना काला घाघरा उसे साफ-साफ दिखाई दे रहा था। घुटनों से ऊपर तक के स्कर्ट में आज वह अपने-आपको एकदम नंगी महसूस कर रही थी।''[३७]

फादर को शंका हो रही थी कि कहीं कैथरिन के द्वारा उपेक्षित हो जाने के कारण ही तो उसने आत्महत्या नहीं कर ली थी? हो सकता है, वह अपनी आत्महत्या का कारण लिखकर छोड़ गया हो। कहीं पंचनामा भरते समय पुलिस को कोई ऐसा पुर्जा मिल जाय, जिसमें कैथरिन और विलसन चौहान की वजह से आत्महत्या करने की बात उसने लिखी हों। इन सब बातों को सोचते हुए फादर के माथे पर पसीना आ जाता है। कादर जल्दी-जल्दी चारपाई को टटोलते हैं, ऊपर बिछे हुए घाघरे के नेफे को मसल-मसल कर देखते हैं। फिर उस कमीज की जेब में हाथ डालते है जिसे उसने पहन रखा था। उसमें से फादर को वही छोटी-सी धर्म-पुस्तिका मिलती है जो फादर ने कृष्णा को पहले दिन दी थी। उसके पन्नों पर कहीं कुछ हाथ का लिखा हुआ नहीं था, किन्तु शुरू से लेकर आखिरी पृष्ठ तक में कई उद्धरणों को रेखांकित किए हुए थे।'' पहला वही था....''तुमने मुझे नहीं चुना, मगर मैंने तुम्हें अपने लिए चुना और नियुक्त किया है।''... दूसरा था- हम पहले उसके स्वरूप को नहीं जानते हैं। परन्तु जब हम उसको मुक्तिदाता जानकर ग्रहण करते हैं, तब सारे भेद समझ में आ जाते हैं।''.... और अंतिम रेखांकित उद्धरण था.... ''मैं तुमसे सच कहता हूं, जो मुझ पर विश्वास करता है, उसे अनंत जीवन प्राप्त होता है।''[३८]

प्रथम उद्धरण के संदर्भ में कृष्णानंद की सोच पहले ही निर्दिष्ट की जा

चुकी है कि उसे अब फादर से वितृष्णा हो चली थी और वह कहना चाहता है कि प्रभु ने नहीं, बल्कि उसने ही उसे अपना नौकर बनाने के लिए चुना था। कमला शिल्पकारनी को भी प्रभु ने नहीं, बल्कि उसने ही चुना था अपने भतीजे के लिए। दूसरे उद्धरण से वह कदाचित यह कहना चाहता है उसने भी पहले फादर के असली रूप को नहीं जाना था। उसे अपना मुक्तिदाता मान लेने के उपरान्त ही उसका भेद खुलता है। और तीसरे का अर्थघटन कृष्णा के संदर्भ में होता है कि उसने भी पादरी पर भरोसा किया और अब मृत्यु के रूप में अनंत जीवन प्राप्त हो रहा है। डा. सुषमा शर्मा इस कहानी को ''नारी-वंचना'' की कहानी मानती है,[३९] परन्तु मैं इस कहानी को ''नारी-वंचना'' के अतिरिक्त ''धर्म-वंचना'' की कहानी भी मानता हूँ।

वस्तुत: संसार का कोई धर्म या मजहब ऐसा नहीं होता जो मनुष्य को अमानवीय होने की शिक्षा देता हो। धर्म के मूलभूत तत्व और सिद्धान्त तो अच्छे ही होते हैं, क्योंकि शायद धर्म का उद्‌भव ही मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाने के लिए हुआ था, परन्तु प्रत्येक धर्म में कुछ ऐसे दंभी, ढोंगी, ढकोसलाबाज लोग आ जाते हैं जो अपने निहित स्वार्थों के लिए धर्म के नाम पर कुछ ऐसा आचरण करते हैं कि कई बार धर्म के प्रति ही वितृष्णा होने लगती है। यहां कृष्णानंद ने ईसाई धर्म अंगीकार ही इसलिए किया था कि वह कमला शिल्पकारनी से शादी कर सके, परन्तु ईसाई धर्म अंगीकृत कर लेने के बाद भी वह तो नहीं हो सका। कमला को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है कि दिन-ब-दिन उन दोनों के बीच की खाई बढ़ती ही गई। कमला भी इस नये उन्मुक्त वातावरण में बहक गयी। अब उसको अपना भविष्य विलसन चौहान में नजर आने लगा। इस प्रकार यह नारी-वंचना की कहानी तो है ही, पर मेरी दृष्टि से ''नारी-वंचना'' से भी अधिक यह ''धर्म-वंचना'' की कहानी है।

''झुरमुट'' या ''कठफोड़वा'' कहानी के धरणीधर उप्रेती भी ईसाई होकर पछता रहे हैं। परन्तु वहाँ स्थिति दूसरे प्रकार की है। धरणीधर को प्यार

में वेदना से नहीं गुजरना पड़ता, बल्कि स्वयं वे तारा पंडितानी और सुप्रिया मसी को प्यार-वंचना देते हैं। धरणीधर कभी मन से ईसाई नहीं हुए थे। युवानी के दौर में सुप्रिया मसी के सौन्दर्य और स्मार्टनेस के कारण वे उसकी ओर आकर्षित होते हैं और यौवनोन्माद में ईसाई धर्म अंगीकार करते हैं। बाद में वृद्धावस्था की ओर जब उनका गमन होता है तब उनके पुराने हिन्दू-संस्कार उछाल मारते हैं। अपनी लेखक की हैसियत से नामक पुस्तक में एक स्थान पर मटियानीजी कहते हैं - ''जो व्यक्ति हिन्दू संस्कारों में पल चुका हो, किसी भी अन्य धर्म को अपनी अंतरात्मा से स्वीकार पाना उसके लिए शायद संभव नहीं। हिन्दू से मुसलमान या ईसाई होने वाले वही लोग सहजता से दूसरे धर्म में रह पाये, जो सिर्फ जाति से हिन्दू थे, संस्कारों से नहीं।''[४०] कृष्णानंद में भी कभी यह बात आती तो धरणीधर की भांति उत्तरावस्था में आती, परन्तु यहां तो कृष्णा की स्थिति गुजराती कहावत का प्रयोग करें तो 'बावानां बेय बगड्यां' जैसी हुई है।

कहानी में मिस्टर गुडविल की बात आती है। मिस्टर गुडविल भी ''नारी-वंचना'' की स्थिति से गुजर चुका है। अत: कृष्णा के दु:ख-दर्द को वह अच्छी तरह समझ सकता है। एक स्थान पर वह कहता है.... ''ब्रदर क्रिस्ती, हव्वा की जात बड़ी डिसआनेस्ट होती है। हमारा जो खुद का वाइफ मिसेज गुडविल था, उसकी कब्र के सिरहाने मिसेज अल्बर्ट का नाम खुदा, हुआ है। आदरसृष्टि मगर हम फिर भी हर सण्डे को उसके सिरहाने मोमबत्ती जलाकर रख जाता है - ''हे प्रभु, तू उसे क्षमा कर, और मुझे सहने की शक्ति दे। यू वुड हार्डली बिलाव, मिस्टर क्रिस्टी पंडित, कि हमने अपनी वाइफ की थर्ड मैरेज पर खुद उसको कांग्रच्युलेट किया था। और जब आफटर डिलीवरी उसका डेथ होने लगा, सदर हास्पिटल में, तो उसने हमारे दोनों हाथों को बड़ी देर तक किस किया और रोता रहा। और हमारा आईज भी भर आया, मिस्टर क्रिस्ती। और हमने प्रार्थना किया - ''हे प्रभु, मैंने बहुत सहा है। मुझे और भी सहने की शक्ति दे।'' मिस कैथरिन की मैरिज पर तुम भी उसका

कांगच्युलेट करेगा, मिस्टर क्रिस्टी ?[४१]

इस प्रकार यह एक करूण कहानी है। यहां पर ''नारी-वंचना'', ''प्रेम-वंचना'', और ''धर्म-वंचना'' का शिकार कृष्णानंद होता है। अगर फादर ने जिस प्रकार कमला को ऊपर उठाने का प्रयत्न किया, ठीक उसी प्रकार कृष्णानंद को भी उठाने का यत्न करते, तो उनकी धर्म-प्रचार प्रवृत्ति पर किसी प्रकार की कोई आंच न आती। यहाँ तो फादर भी दूसरे दुन्यवी मनुष्यों की तरह मिट्टी के साबित हुए।

(५) नीत्शी :-

यह कहानी ''सुखा सागर'' में संकलित है। नीत्शी एक लामा लड़की है। दारमा उसका मुल्क है जो तिबेट में आया हुआ है। इस कहानी में पहाड़ तथा नेपाल-तिबेट आदि प्रदेशों की लड़कियों को- कुंवारियों को- भारत के शहरों में किस प्रकार लाया जाता है और उनसे देह का सौदा करवाया जाता है उसका यथार्थ चित्रण किया है।

दारमा उत्तरी सीमान्त की एक छोटी-सी पट्टी और नीत्शी का गांव तो और भी छोटा-सा, और नीत्शी की आंखें तो और भी छोटी-सी, मगर उन छोटी आंखों में सपना जो तैर रहा था, वह बहुत बड़ा था। वह दाई बनना चाहती थी, प्रशिक्षित दाई, नर्स या मिडवाइफ, क्योंकि उसके मुलुक में बच्चे-लड़के पैदा होते ही मर जाते थे। नीत्शी की माँ के भी कई लड़के हुए पर एक भी नहीं बचा। नीत्शी को अपनी गोद में भाई को लेकर घुमाने का शौक था, पर उसका कोई भी भाई बचा ही नहीं। नीत्शी भेंड़े चराती है, खूब काम करती है, मगर उसकी मां कहती है- ''तू सचमुच दारमा की सब कुंवारियों में अच्छी है बेटी !, मगर नीती तू अपने मेरे काते हुए उनको अपने बाप की तरह मण्डी ले जाकर नहीं बेच सकती। तू भेड़ की खालों और सोहागे-शिलाजीत का रोजगार नहीं कर सकती। ...और तू मेरे वंश को संभालने के लिए हमारे वास्ते कोई ऐसा बेटा भी पैदा नहीं कर सकती, जो तेरे बाप की

तरह इस घर के बाहर बैठकर तमाखू पीता रहे और घर की देखभाल के लिए जोर-जोर से, झबरे कुत्ते जैसी खूंखार आवाज में खांसता रहे। तू तो एक दिन मण्डी जानेवाले किसी लामा मर्द के साथ चली जाएगी। तेरा बाप भी मुझे मण्डी से ही लाया था। तब नीती कौन हमारे घर के बाहर बैठेगा ?तेरा बाप तो अब ज्यादा दिन नहीं रहेगा। वह भी बर्फ की तरफ चला जाएगा।''[४२]

तब नीत्शी को अपनी सामर्थ्यहीनता की अनुभूति कचोटती थी। तभी एक दिन गाँव में मुखिया के साथ दो आदमी आये थे। मुखिया ने बताया था कि ये लोग महात्मा गांधी के देश से आये है और ये लोग जो कहेंगे हमारे कल्याण के लिए होगा। और शहर के लोगों ने बताया था कि नीत्शी जैसी कुंवारियों तो सबकुछ कर सकती है। गोद से उतरकर बर्फीलर खाइयों की ओर चले जाने वाले बच्चों को भी रोक सकती है। ''उन्होंने बताया था कि, चूंकि नीत्शी के मुलुक की औरतें गंवार और मूर्ख है, और उनके नाखून बहुत लम्बे तथा गंदे रहते हैं, इसलिए ज्यादातर बच्चों को विष लग जाता है।... और बच्चे चले जाते हैं। ठीक से उन्हें जनमाने की कोई व्यवस्था नहीं है। और बच्चे चले जाते हैं।''[४३]

और इस प्रकार नीत्शी अपने गांव तथा आसपास के और गांवों की कुंवारियों के साथ शहर के उन लोगों के साथ चली गई थी। जिस शाम नीत्शी वहाँ पहुंची थी, शहर की सुशिक्षित दाई सुशीला जान ने उनकी व्यवस्था का भार संभाल लिया था। और जब सिस्टर सुशीला जान ने स्विच ''आन-आफ'' करके, रोशनी जलाने-बुझाने का ढंग उनको समझाया था तो नीत्शी आश्चर्य से चीख उठी थी, ''ओ रे माई! जादू...''[४४]

नीत्शी स्विच आफ कर देती थी और कमरे में अंधियारा छा जाता था और उसकी साथिने आपस में चिकौटियां काटती थीं, खिलखिलाती थीं और तब नीत्शी सिस्टर ज्होन से सुनी हुई बात दोहरा देती थी...''ए, गोदी में बच्चा भी ऐसे ही लाइट आफ में आता है।''[४५] नीत्शी उन सब कुंवारियों में सयानी थी, बुद्धि की भी तेज थी। साथिने उसकी बात का भरोसा करती

थीं। सिस्टर ज्होन भी नीत्शी को ही सबसे ज्यादा चाहती थी। सिस्टर ज्होन उसे अपने साथ कई जगह "डिलीवरी-केस" अटेण्ड करने ले जाती थी। नीत्शी की ज्ञान की परिधि बढ़ती गई। और फिर सिस्टर ज्होन कई ऐसे बंगलों में भी ले गई जहाँ "डिलीवरी-केस" नहीं, बल्कि शहर के किसी साहब को "अटेण्ड" करना पड़ता था।... एक भंवर- सा था, जिसके किनारे-किनारे दाईगिरी की शिक्षा के बहाने....सिस्टर ज्होन उसे घुमाती थी और फिर कभी-कभी अकेले छोड़ देती थी। नीत्शी भँवर में डूब जाती थी। उसे कुछ सूझता नहीं था कि वह क्या कर रही है? उसके साथ क्या हो रहा है? उसकी छोटी-छोटी आँखों में जो एक सपना था, उसका क्या हो रहा है?"[४६]

कभी-कभी वह माँ को पत्र लिखना चाहती है कि जब वह दो साल का कोर्स पूरा करके वापस लोटेगी कि तो फिर उसकी गोद में आने वाला बच्चा कहीं नहीं जाएगा। वह बड़ा होगा, और फिर एक दिन सयाना होकर घर के बाहर बैठने लगेगा। कभी उसके मन में इच्छा होती कि वह मां को लिखे कि यदि उसकी गोद में बच्चा आनेवाला हो तो वह उसे अपनी गोद में उसके आए तक रोके रखे। पर फिर उसका सपना टूटने लगता है। वह देखती है कि इस मुलुक में भी जहां शिक्षित सिस्टर ज्होन जैसी दाइयाँ होती है वहां भी कई स्त्रियों के लड़के चले जाते हैं। वहां तो केवल उसकी मां के लड़के जाते थे और कइयों के जो बड़े भी होते थे और उन -सोहागे और शिलाजीत का रोजगार भी करते थे। सिस्टर ज्होन के नाखून उसके मुलुक की गंवार-जंगली औरतों की तरह लम्बे और गंदे नहीं थे... साफ-सुथरे और नेल-पालिश से चमकते हुए थे... मगर फिर भी शहर के कई बच्चों को विष लग जाता था। बच्चे चले जाते थे। और नीन्शी का सपना टूटने लग गया था कि जब यहां भी यों ही बच्चे चले जाया करते हैं तो फिर इस शिक्षा-दीक्षा से लाभ ?

सिस्टर ज्होन ने देवता-भूतों के प्रपंचों के माया-जाल की मिथ्या मान्यताओं के प्रति नीत्शी की आस्था को हटा दिया था, लेकिन सिस्टर

ज्होन ने नीन्शी को एक और माया-जाल में फंसा दिया था। सिस्टर ज्होन ने उसे समझाया था कि किसी भी कार्य में सफल होने के लिए ''सेल्फ-एक्सपी रिएन्स'' यानी आत्मानुभव होना जरूरी है। सिस्टर ज्होन ने नीत्शी को यह भी समझाया था कि यों अनुभव अर्जित करना कोई गुनाह नहीं है और अगर गुनाह की प्रतीति कभी हो तो सिस्टर ज्होन ने उसे चर्च में फादर मसीह का चित्र भी दिखा दिया था कि जिसके सामने गुनाह को स्वीकार करने पर उससे मुक्ति मिल जाती है।''[४७]

''कोर्स'' पूरा करके लौटने के बाद रास्ते में नीत्शी को पता चलता है कि वह तो खुद गर्भवती है। ''शहर में जो धूप खिलती है, जो बिजली जलती है, उसमें से छंटकर एक गहरा अंधकार भी नीत्शी की आँखों में समा गया है। नीन्शी जब आयी थी, तब उसकी आत्मा उसकी देह बर्फ के बेदाग फूलों-जैसी उजली थी। नीत्शी अब लौट रही थी। उसे लगता है, बर्फ के फूल गल गए हैं। शहर की धूल उससे लिपट गई है। नीत्शी मुलुक को वापस लौट रही है। सबकुछ गंदला गया है।''[४८]

नीत्शी की मासूमियत खत्म हो गई है। वह अब ''कुंवारी'' से औरत हो गई है। नीत्शी अपने मुलुक दारमा से शहर इसलिए गई थी कि अपनी मां को सुख पहुंचाएगी, उसकी गोद के बच्चे न मरे, ऐसा उपाय सीख लायेगी और कहां अब वह खुद ऐसी स्थिति में घर लौट रही है कि मां को उसके लिए कोई दाई बुलानी पड़ेगी। और फिर यह ख्याल उसके मन को और भी व्याकुल और कातर करने लगा कि कहीं उसकी गोदी में आने वाला बच्चा भी बर्फीली खाइयों की तरफ तो नहीं चला जाएगा ? इस ख्याल के आते ही नीत्शी बावली सी होकर अपनी साथिनों से लिपट कर बिलख-बिलख कर रोने लगी....''बहनों, मैं तुम्हारे साथ अपना मुलुक भेंटने नहीं आ सकती। मैं शहर को ही जाऊंगी।... मैं तुम्हारे साथ मुलुक में मां को भेंटने नहीं आ सकती। मैं...''[४९] उसकी साथिनें जब पूछती है कि ''क्यों भला, नीती दी ?'' तो उसके जवाब में नीत्शी कहती है...''बहनों, एक बार सिस्टर

ज्होन के पास सीखने को गई थी कि बच्चे कैसे आते हैं... और अबकी बार...''[५०] कहानी का अंत इन वाक्यों के साथ होता है... ''मगी आगे नीन्शी बोल नहीं सकी, बता नहीं सकी कि सिस्टर ज्होन सिर्फ बच्चे जनाना नहीं नहीं, बल्कि, उनसे मुक्ति दिलाना भी जानती हैं...''[५१]

यहाँ नीत्शी तो लामा लड़की है, किन्तु सिस्टर ज्होन से जुड़े संदर्भ के कारण यह कहानी ''ईसाई-संदर्भ'' की कहानी भी मानी जा सकती है। इस कहानी से एक बात साफ हो जाती है कि धर्म के निष्कर्षों की गलत व्याख्याएँ हर धर्म और संप्रदाय के गलत और पांखडी लोग करते हैं। ईसाई धर्म में ''कनफेशन'' की जो विभावना है, वह बड़ी ऊंची और उदात्त है। यदि गलती से हम कोई गुनाह कर बैठते हैं तो प्रभु के आगे ''कनफेस'' करने से हमें गुनाह से मुक्ति मिल जाती है, किन्तु यह ''कनफेस'' तहे दिल से होना चाहिए उसमें पश्चाताप की आग होनी चाहिए। ऐसा नहीं कि गुनाह करते जाओ, अपराध करते जाओ, और फिर ''कनफेस'' करके अपने पापों से मुक्त हो जाओ। यहाँ ईसा-मसीह का गलत वास्ता देकर सिस्टर ज्होन नीत्शी से अपराध करवाती है, पाप करवाती है।

(६) छाक :-

यह कहानी भी मटियानीजी के कई संकलनों में आई है। वैसे तो यह कुंमाऊं के पहाड़ परिवेश की कहानी है। उसके रीति-रिवाज मान्यताएँ आदि पहाड़ी परिवेश की हैं, किन्तु कहानी के नायक किशन मास्टर लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। कहानी के केन्द्र में तीन पात्र हैं- किशन मास्टर, उमा और गीता मशी या गीता मास्टरनी। किशनचन्द्र उप्रेती और गीता कालेज में साथ-साथ पढ़ते थे। जब उनका परिचय हुआ तब किशन बी.ए. फाइनल तथा गीता इण्टर में थी। बाद में किशनचन्द्र उप्रेती एम.ए. करके लखनऊ विश्वविद्यालय में चले गये। गीता बी.ए. करने के बाद पहाड़ी शहर की एडम्स हाईस्कूल में प्राध्यापिका है। कॉलेज में गीता और किशन एक-

दूसरे को खूब चाहते थे। मिरतोला और जागेश्वर में दोनों हाथ में हाथ डाले खूब-खूब घूमे थे। परन्तु उनका यह प्रणय परिणय में परिवर्तित नहीं हो सका, क्योंकि उनका विवाह उनकी अपनी जाति-बिरादरी में उमा नामक लड़की से हो जाता है। किशन मां की बीमारी के कारण गाँव जाते हैं। वहा माँ अंतिम सांसें गिन रही थीं और उनकी इच्छा थी कि किशन-उमा का ब्याह हो जाए। इस संदर्भ में लेखक ने एक टिप्पणी दी है-"सवाल सिर्फ मां की अंतिम इच्छा का ही नहीं उपस्थित हुआ, बल्कि बात सामने आयी उमा के पिठा लगी वाग्दत्ता होने की भी और यहां आकर खुद किशन भी निरूत्तर हो गए।"[५२]

इस प्रकार मास्टर किशन और उमा का विवाह हो गया। गीता को पहले तो इसका बहुत बड़ा आघात लगा और 'प्रेम-वंचना' के कारण वह किशन को भी दोषी समझते हुए नफरत करने लगी। परन्तु जब उसे सही वस्तु-स्थिति का ज्ञान हुआ और मालूम हुआ कि किन स्थितियों में किशन को विवाह करना पड़ा तो उसका क्रोध शांत हुआ और उसने किशन को क्षमा कर दिया। पर दोनों के बीच मैत्री के संबंध आजीवन बने रहे। गीता की बड़ी बहन एक ईसाई ब्राह्मण परिवार में चली गई थी और बाद में गीता भी ईसाई धर्म अंगीकृत कर लेती है। उसके कारण उसे एडम्स हाईस्कूल में अध्यापिका की नौकरी भी मिल जाती है।

गीता में यह जो क्षमा-भाव मिलता है उसके पीछे उसके धार्मिक संस्कार भी है, क्योंकि ईसाई-धर्म में क्षमा, दया, करूणा और सहनशीलता आदि गुणों पर विशेष तवज्जों दी जाती है। जो सहन करता है, सहन करता है और क्षमा करता है, वह प्रभु के अधिक निकट होता है। प्रभु भी उसे चाहते हैं जिसमें ये गुण होते हैं। अत: गीता न केवल किशन को क्षमा कर देती हैं बल्कि, किशन को समझाती भी है कि जब विवाह कर ही लिया है तो उसको निबाहना भी चाहिए। सच्चे पुरूष का यही कर्तव्य है। उनका दाम्पत्य-जीवन सुखी-संपन्न हो उसके लिए वह हर संभव कोशिश करती है। गीता के स्थान पर यदि कोई दूसरी स्त्री होती तो किशन को गुमराह भी कर सकती थी, परन्तु

गीता ऐसा नहीं करती। बल्कि वह उमा से भी मैत्री-संबंध स्थापित करती है और उसे किशन के अनुरूप और अनुकूल बनाने के प्रमाणिक प्रयत्न करती है। वह कभी नहीं चाहती कि दाम्पत्य-जीवन में किसी प्रकार की दरारें पड़ें। दूसरी और उमा भी एक समझदार गृहिणी है। उसका मन भी उदार है। वह किशन और गीता की दोस्ती को लेकर कोई बखेड़ा नहीं खड़ा करती, बल्कि उन दोनों पर विश्वास रखती है और खुद भी गीता से प्रगाढ़ दोस्ती में बंध जाती है। वह गीता को अपनी दीदी मानती है। माना कि इस प्रकार के चरित्र नहीं मिलने, पर ऐसे चरित्र हो ही नहीं सकते, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। कथाकार केवल यथार्थ की नकल नहीं करता, वह जीवन की संभावनाओं की एक सार्थक खोज करता है, जीवन के क्षितिजों को विस्तार और व्यापकता देता है।

गीता और किशन दोनों उदार चरित्र और उदात्त-चेत्ता चरित्र है। किसी प्रकार की जातिगत या धर्मगत संकीर्णता का उनमें अभाव है। इसलिए ईसाई धर्म अंगीकार करने के बावजूद वह किशन और उमा के साथ कुमाऊं के देवी-देवता के दर्शन करती है और हिन्दू त्यौहारों को भी मनाती है, दूसरी और किशन-उमा भी गीता के साथ कभी-कभी चर्च की मुलाकात लेते हैं। एक प्रकार का धार्मिक सौहार्द इस त्रिपुटी में मिलता है। वह पारस्परिक प्रेम के कारण होता है। आज भी मेरी स्मृति में कौंध रहा है, जब मेरे निर्देशक महोदय देसाई साहब अपनी कक्षाओं में प्रसंगवश कहा करते थे कि के धार्मिक-सौहार्द और सर्व-धर्म-समभाव के लिए व्यक्ति के विधर्मी मित्र होने चाहिए। इसके कारण धार्मिक कट्टरता कम होती है। गीता, किशन और उमा के संदर्भ में हम इस सत्य को प्रमाणित होते हुए देख सकते हैं।

गीता आजीवन अविवाहित रहती है। पर उसके कारण उसके दामन में कोई दाग नहीं लगने देती। उसके वासनात्मक-शारीरिक प्रेम का उदात्तीकरण (सब्लिमेशन) होता है और अपने जीवन को शिक्षा तथा सामाजिक सेवा में लगा देती है। यहां प्रेम का उर्ध्वीकरण होता है।

अत: एक बार उमा जब बीमार पड़ती है, तब गीता पूरे मनोयोग से उसकी तिमारदारी में जुट जाती है, रात-दिन एक कर देती है और उमा को मौत के मुंह से बचा लेती है। उमा की बीमारी बड़ी खतरनाक थी और उसमें उसकी जान भी जा सकती है, परन्तु गीता अपनी स्कूल से छुट्टियाँ लेकर आ जाती हैं, और तब एक अस्पताल में डटी रहती है जब तक उमा अच्छी नहीं हो जाती और स्वास्थ्य-लाभ करके घर नहीं आ जाती।

उसी गीता की मृत्यु हुई है देहरादून में। दोनों पति-पत्नी बहुत दु:खी और व्यथित है। किशन मास्टर गीता के लिए ''छाक'' छोड़ना चाहते हैं पर उमा को यह बात कहने में झिझकते है। किसी की मृत्यु पर एक वक्त का खाना छोड़ना ''धाक छोड़ना'' कहलाता है। दूध, खून या बिरादरी का रिश्ता हो तो ''छाक'' छोड़ा जाता है, पर गीता के साथ इस प्रकार का कोई रिश्ता तो है नहीं, दूसरे उसका धर्म भी दूसरा है। किन्तु किशन मास्टर को इस द्वन्द से उबारने का काम उमा ही करती है। वह शोकमग्न -चिंतामग्न द्विधाग्रस्त किशन को कहती है-''उन बेचारी ने तब जाने कितनी रातें मेरे लिए जागते काटीं। मैं क्या उनके लिए एक वक्त का छाक भी नहीं छोड़ सकती। चलो, चलें भीतर। मैं जानती हूं, तुमने भी कहीं कुछ नहीं खाया-पिया होगा''[५३]

इस प्रकार यह दम्पति साबित कर देता है कि सच्चा संबंध तो आत्मा का होता है- सबसे ऊंची प्रेम-सगाई। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में दोनों नारी चरित्र अपनी उदात्तता में ऊपर उठ आए हैं। साथ ही धार्मिक सहिष्णुता और सौहार्द की भावना भी यहां प्रकट हुई है। मटियानीजी ने अपने कथा-साहित्य में कुछेक महिमामयी ईसाई महिलाओं का अंकन किया है। गीता भी उनमें से एक हैं।

कुछ अन्य कहानियाँ :-

''कोहरा'' कहानी के केन्द्र में तो मिसेज खोसला है, पर उसमें फादर पराँजपे के माध्यम से ईसाई परिवेश आता है। इस कहानी पर

मटियानीजी ने उपन्यास भी लिखा है... जलतरंग। बाद में इसी का संवद्धित व संस्कारित रूप ''माया सरोवर'' उपन्यास में भी आया है। मिसेज खोसला के पति एक व्यावसायिक किस्म के आदमी हैं, उनके लिए प्रेम की व्याख्या शरीर से आगे कभी बढ़ती, और मिसेज खोसला प्रेम की व्यापकता में जाना और जीना चाहती है। वह मानती है कि सिर्फ संपर्कों में आना और रहना जिन्दगी को रिक्त कर देती है। दिल और दिमाग की व्यापकता को चाहने वाली मिसेज खोसला दुन्वयी चीजों से खुश नहीं रहती। उनका बौद्धिक स्तर काफी ऊँचा है। अत: अक्सर वह पहाड़ों में चली जाती है। इन यात्राओं में उसकी मुलाकात बी.के. सी.के. और फादर पराजये से होती है। वह इनमें से किसी के भी साथ शारीरिक रिश्ता नहीं जोड़ती है। बी.के. या सी.के. के साथ बातें प्राय: वह फादर परांजपे की करती रहती हैं। फादर परांजपे कभी कट्टर हिन्दू थे, किन्तु क्रिश्चियन प्रेमिका की मृत्यु के उपरान्त वे ईसाई हो जाते हैं। मिसेज खोसला को मानसिक पारितोष फादर परांजपे के संपर्क में ही मिलता है। जिस प्रकार मटियानीजी ने कुछेक महिमामयी ईसाई महिलाओं का चित्रण किया है, उसी प्रकार कहीं-कहीं उन्होंने आदर्श और ऊँचे ख्यालों के ईसाई पुरूषों का भी चित्रण किया है। फादर परांजपे उनमें से एक है। फादर परांजपे के माध्यम से ईसाई धर्म के कुछेक अच्छे आयाम हमारे सामने आते हैं।

इसके अलावा ''दैट माय फादर वालजी'' कहानी में मुंबई के डिबोचर सेठ वालजी की कहानी आती है। कहानी ''एबसर्ड'' शैली में है और एक पागल के प्रलाप के रूप में वह हमारे सामने आती है। कहानी में सेठ वेलजी या वालजी की एक प्रेमिका के रूप में मिस क्रिस्टिना का चरित्र आता है जो एक ईसाई महिला है। उसके कारण ही कहानी नायक पागल की मां को टैरेस से धक्का मार दिया जाता है, क्योंकि वह अपने बेटे का अधिकार सेठ से मांग रही थी।

इसके अलावा ''बित्ताभर सुख'' की सुमित्रा जो गांवों में और कसबों

में मिडवाइफ का काम करती है उसके भी ईसाई होने के संकेत कहानी में मिलते है। मटियानीजी ने कुल सौ-डेढ़ सौ कहानियाँ लिखी है उनके कई कहानियों में गौण पात्रों के रूप में ईसाई चरित्र हमें मिलते हैं। इनके ''जलतरंग'', ''माया सरोवर'' तथा ''चंद औरतों का शहर'' जैसे उपन्यासों में भी ईसाई संदर्भ उपलब्ध होते हैं। उनके उपन्यासों की कथावस्तु और चरित्र उनकी कई कहानियों में प्रतिबिंबित हुए हैं।

निष्कर्ष :-

अध्याय के समग्रावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक सहजतया पहुंच सकते हैं....

(१) मटियानीजी की कहानियों में ईसाई संदर्भ मिलने का कारण यह है कि कुमाऊं प्रदेश में कई हिन्दू धर्म-परिवर्तन की प्रक्रिया द्वारा ईसाई हुए है। हिन्दुओं में यह जो प्रवृत्ति मिलती है उसके दो कारण हैं। निम्नजातियों में जातिगत कट्टरता, जातिगत ऊंच-नीच का संस्तरण निम्नजातियों पर अत्याचार-अन्याय और बात-बात में उनका होने वाला अपमान आदि कारण भूत हैं, तो ऊंची जाति के लोग प्राय: अन्तर्जातीय विवाह-प्रेम आदि के कारण धर्म-परिवर्तन करते हैं।

(२) मटियानीजी की कहानियों में जो ईसाई चरित्र मिलने हैं उनकी छ: कोटियाँ हैं....(१) विशुद्ध रूप से ईसाई, जैसे मिसेज ग्रीनवुड, मिस्टर ग्रीनवुड, मिस्टर राबर्ट आदि। (२) ऊंची जाति के लोग जो प्रेम इत्यादि के कारण ईसाई धर्म अंगीकार करते हैं, जैसे फादर, परांजपे, सिस्टर धरणीधर उप्रेती (झुरमुट कहानी के डी.डी.)। ''चुनाव'' कहानी का मि. क्रिस्टी। (३)निम्नजाति के लोग जैसे मिसेज क्रिस्टीना, मि. गुडविल आदि। (४)मध्यवर्गीय जातियाँ जैसे सुंप्रिया मसी, सुमित्रा, पादरी जानसन चौहान, उनका भतीजा विलसन चौहान आदि। (५) पुराने ईसाई जो पिछली कई पीढ़ियों से ईसाई है, जैसे, सुप्रिया मसी, विलसन चौहान आदि।(६) नये

ईसाई जो अभी हाल में ईसाई हुए हैं, जैसे फादर परांजपे, डी.डी. आदि ।

(३) इन कहानियों में ईसाई-धर्म में रसे-बसे और पगे हुए चरित्र भी मिलते हैं, तो कुछ पाखंडी और ढोंगी किस्म के चरित्र भी मिलते हैं। रसे-बसे और पगे चरित्रों में ईसाई धर्म की उदात्ता, करूणा, दया, क्षमा, आदि गुण प्राप्त होते है। ऐसे चरित्रों में मिसेज ग्रीनवुड, फादर परांजपे, सुप्रिया मसी आदि चरित्र मिलते है । पाखंडी और ढोंगी चरित्रों में सिस्टर सुशीला ज्होन (कहानी-नीत्शी), पादरी जानसन (कहानी-चुनाव) मिसेज गुडविल (कहानी-चुनाव) आदि की गणना कर सकते हैं।

(४) इनमें कुछ ऐसे पात्र मिलते हैं जिनके ईसाइयन के नाम पर छला गया है। ऐसे पात्रों में 'चुनाव' के कृष्णानंद और मिस्टर गुडविल, ''नीत्शी'' कहानी की नीत्शी आदि हैं।

(५) इन कहानियों में ईसाई धर्म की सूक्तियाँ, रीति-रिवाज और विशिष्ट ईसाई शब्दावली का प्रयोग मिलता है।

*

संदर्भानुक्रम :-

(१) टाइम्स आफ इण्डिया : दिनांक ०८.०७.२००६ : पृ.१।

(२) दृष्टव्य : भूमिका : मेरी तैंतीस कहानियां।

(३) कहानी : मिसेज ग्रीनवुड:कहानी-संकलन :सूखा सागर: पृ.३५।

(४) से (१२) वही :पृ. क्रमश: ३६,३६,३३-३४,३८,३८,३९,४०,४१, ४१-४२।

(१३) दृष्टव्य : कहानी: झुरमुट: कहानी-संकलन : बर्फ की चट्टानें : पृ. २४८।

(१४) से (१६) : वही : पृ. क्रमशः २५४, २५६, २५६।

(१७) कहानी : दीक्षा : संकलन - सूखा सागर : पृ. १२३।

(१८) से (३१) : वही : पृ. क्रमशः १२१, १२१, १२१, १२२, ११९, ११९,
१२०-, ११९,१२०-१२१, १२४-१२५, १२८, १२५, १२८।

(३२) कहानी : चुनाव : संकलन -सूखा सागर : पृ. ५४-५५।

(३३) से (३८) : वही : ५९, ६१, ६२, ६४, ६८, ६९।

(३९) दृष्टव्य : प्रबंध : ''शैलेश मटियानी की कहानियों में नारी के
विविध रूपों का चित्रण : डॉ. सुष्मा शर्मा : पृ. २४८।

(४०) लेखक की हैसियत से : शैलेश मटियानी : पृ. ११८।

(४१) कहानी : चुनाव : संकलन -सूखा सागर : पृ. ६८।

(४२) कहानी : नीत्शी : संकलन -सूखा सागर : पृ. ४६-४७।

(४३) से (५१) : वही : पृ. क्रमशः ४७, ४८, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२,
५२, ५२।

(५२) कहानी : छाक : संकलन -बर्फ की चट्टानें : पृ. ५४८।

(५३) वही : पृ. ५८१।